वर्ण-विचार

वर्ण-विचारमे वर्णक विवेचन रहैत अछि । भाषाक सभसँ छोट इकाइ वर्ण अछि । **वर्ण** ओहि मूल ध्वनिकेँ कहल जाइत अछि जकर खण्ड नहि हो ।

यथा-क, ग, च, अ, इ, आदि ।

वर्णक समूह **वर्णमाला** कहबैछ । मैथिलीमे वर्णक संख्या 44 अछि । वर्ण मुख्यत: दू प्रकारक होइछ--स्वर एवं व्यञ्जन ।

स्वर वर्ण

स्वर-जाहि वर्णक उच्चारण बिना कोनो दोसर वर्णक सहायतासँ होइत अछि, ओ स्वर वर्ण कहबैछ । यथा-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ-अर्थात् कुल एगारह स्वर अछि । स्वर दू प्रकारक मानल गेल अछि-

ह्रस्व एवं दीर्घ ।

ह्रस्व स्वर-जाहि स्वरक उच्चारणमे कम समय लगैत अछि ओ ह्रस्व स्वर थिक । एकरा एक मात्रिक अथवा लघु स्वर सेहो कहल जाइछ । यथा-अ, इ, उ एवं ऋ ।

दीर्घ स्वर-ह्रस्व स्वरक अपेक्षा जाहि वर्णक उच्चारणमे दूना समय लगैत अछि ओ दीर्घ स्वर कहबैत अछि । एकरा द्विमात्रिक अथवा गुरु स्वर सेहो कहल जाइत अछि । यथा-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ ।

उपर्युक्त दीर्घ स्वरमे ए, ऐ, ओ तथा औ केँ संयुक्त स्वर अथवा सन्ध्यक्षर सेहो कहल जाइत अछि । संयुक्त स्वर दू स्वरक संधिसँ बनैत अछि, यथा-

अ+इ=ए

अ+ए=ऐ

अ+उ=ओ

अ+ओ=औ

तहिना किछु गोटे अ-आ, इ-ई, उ-ऊ कें सजातीय किंवा सवर्ण मानैत छथि कारण जोड़ाक दुनू वर्णमे ह्रस्व-दीर्घक विभेद होइतहुँ आपसमे एकहि उच्चारणक शैली एवं उच्चारण-प्रयत्नक अछि । ओतहि अ-ई, अ-उ, आ-इ, आ-ऊ, इ-ऋ आदि विजातीय अथवा असवर्ण कहल जाइछ; कारण ई आपसमे दू उच्चारण शैलीक तथा दू उच्चारण-प्रयत्नक अछि ।

व्यञ्जन वर्ण

स्वर वर्णक सहायतासँ जकर उच्चारण होइत छैक ओ व्यञ्जन वर्ण कहबैछ । एकर संख्या 33 अछि । व्यञ्जन वर्णकें तीन भागमे बाँटल गेल अछि–

स्पर्श वर्ण –जाहि व्यंजन वर्णक उच्चारण कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, ओष्ठ आ दाँतक स्पर्शसँ होइत अछि ओ स्पर्श वर्ण अछि । एकर संख्या 25 अछि जाहिमे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्गक सब वर्ण अबैत अछि ।

अन्तःस्थ वर्ण–य, र, ल तथा व चारिटा अन्तःस्थ वर्ण अछि । ई सभ वर्ण स्वर ओ व्यञ्जनक बीच स्थित अछि ।

ऊष्म वर्ण–श, ष, स एवं ह ऊष्म वर्ण अछि । एहि वर्णक उच्चारणमे मुँहसँ गर्म हवा बहराइत अछि ।

मैथिलीमे किछु संयुक्त वर्ण सेहो प्रचलित अछि जे दू व्यञ्जनक मेलसँ बनल अछि । यथा–

क्+ष=क्ष

त्+र=त्र

ज्+ञ=ज्ञ

श्+र=श्र

अनुस्वार ओ विसर्ग **अयोगवाह** अछि । कारण एकर प्रयोग स्वर ओ व्यञ्जन दुनू वर्णक संग होइत अछि । यथा– अं-अः, कं-कः ।

स्वरक संकेत चिह्नकें **मात्रा** कहल जाइत अछि । प्रत्येक व्यञ्जनमे स्वरक मात्रा लागल रहैत छैक । उदाहरण द्वारा एकरा निम्न रूपें देखाओल जा सकैत अछि –

क्+अ=क क्+ए=के

क्+आ=का क्+ऐ=कै

क्+इ=कि क्+ओ=को

क्+ई=की क्+औ=कौ

क्+उ=कु क्+ऋ=कृ

क्+ऊ=कू

निम्नलिखित शब्दसँ स्वरक मात्राकेँ फराक कऽ देखाओल जाइत अछि –

कलम=क्+अ+ल्+अ+म्+अ

पवित्र=प्+अ+व्+इ+त्+र्+अ

पुस्तकालय=प्+उ+स्+त्+अ+क्+आ+ल्+अ+य्+अ

स्त्री=स्+त्+र्+ई

देवेन्द्र=द्+ए+व्+ए+न्+द्+र्+अ

उच्चारण-स्थान

वर्णक उच्चारण मुँहसँ सम्बद्ध जाहि अवयवविशेषसँ होइत अछि ओ वर्णक उच्चारण-स्थान कहबैत अछि । उच्चारण स्थान निम्नलिखित अछि –

1. **कण्ठ**– अ, आ, कवर्ग, ह एवं विसर्गक उच्चारण कण्ठसँ होइत अछि । ई सभ कण्ठ्य वर्ण कहल जाइछ ।
2. **तालु**– इ, ई, चवर्ग, य एवं श क उच्चारण तालुसँ होइत अछि तथा ई सभ तालव्य वर्ण कहबैछ ।
3. **मूर्द्धा**– ऋ, टवर्ग, र तथा ष क उच्चारण मूर्द्धासँ होइत अछि एवं ई मूर्धन्य वर्ण कहबैछ ।
4. **दाँत**– तवर्ग, ल तथा स क उच्चारण दाँतक स्पर्शसँ होइत अछि एवं ई दन्त्य वर्ण कहबैछ ।
5. **ओष्ठ**– उ, ऊ एवं पवर्गक उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि तथा ओष्ठ्य वर्ण कहबैछ ।

6. **नासिका**–जकर उच्चारण मुँहक अतिरिक्त नाकक-सहयोगसँ होइत अछि ओ अनुनासिक कहबैत अछि । यथा– ङ, ञ, ण, न तथा म ।

7. **कण्ठ-तालु**–जकर उच्चारण कण्ठ-तालु दुनूक सहयोगसँ होइत अछि ओ वर्ण कण्ठ-तालव्य कहबैत अछि । यथा–ए एवं ऐ ।

8. **कण्ठ-ओष्ठ**–ओ तथा औ क उच्चारण कण्ठ एवं ओष्ठ दुनूक सहयोगसँ होइत अछि । ई वर्ण कण्ठ-ओष्ठ्य कहबैत अछि ।

9. **दन्त-ओष्ठ**–व वर्णक उच्चारण दाँत एवं ओष्ठसँ होइत अछि तथा ई दन्तौष्ठ कहबैछ ।

अल्पप्राण-महाप्राण

अल्पप्राण–जाहि वर्णक उच्चारणमे श्वास (प्राण) वायुक मात्रा अल्प होइत अछि, से सभ अल्पप्राण वर्ण कहबैछ । यथा–

प्रत्येक वर्गक पहिल (क, च, ट, त एवं प), तेसर (ग, ज, ड, द एवं ब) तथा पाँचम (ङ, ञ, ण, न तथा म) वर्ण तथा अन्त:स्थ व्यञ्जन (य,र,ल,व) वर्ण अल्पप्राण थिक ।

महाप्राण–जाहि वर्णक उच्चारणमे श्वासवायुक मात्रा अधिक होइत अछि अर्थात् 'ह' कार ध्वनि सुनबामे अबैत अछि ओ महाप्राण कहबैत अछि ।

प्रत्येक वर्गक दोसर (ख, छ, ठ, थ तथा फ) आ चारिम (घ, झ, ढ, ध एवं भ) वर्ण समस्त ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) महाप्राण अछि ।

घोष-अघोष

घोष–जाहि वर्णक उच्चारणमे स्वर तंत्रीमे कम्पन होइत अछि ओ घोष वर्ण कहल जाइछ । समस्त स्वर वर्ण, प्रत्येक वर्गक तेसर, चारिम तथा पाँचम वर्ण, अन्त:स्थ वर्ण तथा ह घोष कहबैत अछि ।

अघोष–जाहि वर्णक उच्चारणमे स्वर तंत्रीक कम्पन नहि होइत अछि ओ अघोष वर्ण अछि ।

यथा-प्रत्येक वर्गक पहिल आ दोसर वर्ण तथा श, ष, स अघोष कहबैछ ।

अनुतान

ध्वनिक उतार-चढ़ाव (आरोह-अवरोह)क कारणेँ अर्थमे जे अन्तर होइत अछि, ओ अनुतान कहबैत अछि ।

यथा- राम चोर अछि ।

राम चोर अछि ?

राम चोर अछि !

एतय तीनू वाक्य समान अछि, मुदा उच्चारणक कारणेँ तीनूक तीन अर्थ अर्थात् प्रथम स्वीकारात्मक, दोसर प्रश्नवाचक आ तेसर विस्मयादि बोधक वाक्य भऽ जाइत अछि ।

कविता आ गीतक स्वर-लहरिमे अनुतान स्पष्ट रूपसँ देखबामे अबैत अछि ।

बलाघात वा स्वराघात

शब्द अथवा वाक्यक उच्चारणमे स्वर विशेष पर जे जोर देल जाइत अछि ओ बलाघात अथवा स्वराघात कहबैत अछि । यथा-'सत्य' एहि शब्दमे 'स' पर जोर देल गेल अछि । अर्थात् संयुक्त अक्षरसँ पूर्वक अक्षर पर बलाघात होइत अछि । ई बलाघात तीन प्रकारसँ होइत अछि –

वर्ण-बलाघात, शब्द-बलाघात आ वाक्य-बलाघात ।

वर्ण-बलाघात--सामान्यत: विसर्गक पूर्वक अक्षर पर बलाघात होइत अछि । यथा-'दु:ख' मे 'द' अक्षर पर बलाघात अछि ।

संयुक्त अक्षरक पूर्वक अक्षर पर बलाघात होइत अछि । यथा- 'पत्ता' मे 'प' पर बलाघात अछि ।

शब्द-बलाघात--शब्द-बलाघातमे कोनो शब्द विशेषपर जोर देल जाइत अछि ।

यथा- राम आइ घर नहि जायत ।

राम आइ घर नहि जायत ?

एतय दोसर वाक्यक 'नहि' शब्दपर जोर देलासँ प्रश्नवाचक वाक्य भऽ गेल ।

वाक्य बलाघात-शब्द बलाघातसँ वाक्य बलाघात अधिक अर्थपूर्ण होइत अछि ।

यथा- आइ **हम** व्याकरण पढ़ब ।

आइ हम **व्याकरण** पढ़ब ।

उपर्युक्त वाक्यमे 'हम' पर जोर देलासँ आ दोसर वाक्यमे व्याकरण पर जोर देला सँ अर्थमे अन्तर भऽ गेल अछि । प्रथम वाक्यक अर्थ भेल जे केओ आन नहि, हम व्याकरण पढ़ब । दोसर वाक्यक अर्थ भेल जे हम आन कोनो वस्तु नहि मात्र व्याकरणे पढ़ब । ई अर्थभेद बलाघातक कारणेँ भेल अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वर्ण ककरा कहल जाइत अछि ?
2. स्वर आ व्यञ्जनमे अन्तर स्पष्ट करू ?
3. सजातीय आ विजातीय स्वरमे अन्तर स्पष्ट करू ?
4. संयुक्त व्यञ्जनक उदाहरण लिखू ।
5. बलाघात ककरा कही ?
6. उच्चारण स्थानसँ की बुझैत छी ?
7. निम्नलिखित शब्दक ध्वनि सबकेँ पृथक् करू –

   रमेश, परीक्षा, पवित्र, आत्मा, विद्यालय
8. निम्नलिखित ध्वनिक मेलसँ शब्द बनाउ ।

क्+अ+र्+म्+अ

ब्+इ+द्+य्+आ

क्+ष्+अ+त्+र्+इ+य्+अ

ज्+ञ्+आ+न्+अ

प्+अ+र्+व्+अ+त्+अ

9. निम्नलिखित कथनमे सत्य/असत्य लिखू –

(क) व्यञ्जनक संख्या 33 अछि । (सत्य/असत्य)

(ख) 'ह' क उच्चारण स्थान कण्ठ अछि । (सत्य/असत्य)

(ग) 'क' अल्पप्राण थिक । (सत्य/असत्य)

(घ) 'स' घोष वर्ण थिक । (सत्य/असत्य)

(ङ) 'ई' सजातीय स्वर अछि । (सत्य/असत्य)

मैथिलीक वर्तनी

वर्तनीक शाब्दिक अर्थ होइछ 'हिज्जे' (स्पेलिंग), 'मार्ग' आदि । हिज्जेक तात्पर्य भेल कोनहु शब्दमे आयल अक्षर सभक मात्रा सहित उच्चारण करब । दोसर शब्दमे वर्तनीकेँ वर्ण ओ मात्राक विन्यस्त क्रम सेहो कहल जाइछ । एहि दृष्टिएँ कहल जा सकैछ जे वर्तनी, भाषाक एहन नियामक व्यवस्था थिक जकरा द्वारा शब्दमे प्रयुक्त वर्ण ओ मात्राक उपयुक्त ओ व्यवस्थित क्रम निर्दिष्ट हो ।

वस्तुत: वर्तनीक अर्थ थिक समरूप लेखन-शैली (कॉमन पैटर्न ऑफ राइटिंग अथवा एक्सेप्टेड फॉरमेट ऑफ राइटिंग) । अर्थात्, कोनो भाषाक लेखन-प्रक्रियामे जे विभिन्नता प्रचलित अछि ताहिपर यथेष्ट विचार कऽ ओकरा एकरूप बनायब एकर मुख्य कार्य थिक । कोनो मानक भाषाक लेल भाषिक एकरूपता अनिवार्य थिक जाहिसँ ओकर ग्राह्यता सर्वमान्य हो, आन-आन भाषा-भाषीक संग ओकर संप्रेषण हो तथा राष्ट्रिय अथवा अन्तरराष्ट्रिय स्तरपर ओ स्थापित हो । तेँ 'वृत् वर्तमाने' धातुसँ बनल वर्तनीक अर्थ थिक भाषाक वर्तमान विभिन्नताकेँ पाटि ओकरा एक आदर्श वा प्रामाणिक रूप प्रदान करब । इएह भाषाक मानकीकरण (स्टैन्डर्डाइजेसन ऑफ लैंग्वेज) कहबैछ 'वर्तनी' ।

बाल्यावस्थहिसँ नेनामे शब्द, अक्षर ओ मात्राक विहित उच्चारण-क्षमता विकसित करबापर जोर देल जाइछ । इएह आधारभूत दक्षता ओकर मस्तिष्कमे अपन वैयक्तिक क्षमताक अनुकूल एक मानक स्वरूप धारण कऽ लैछ तथा उत्तरोत्तर ओकर भाषिक अभिव्यक्ति क्षमता परिष्कृत ओ समृद्ध होइत जाइत छैक । प्रारंभिक स्तरसँ उच्चारणक शुद्धता पर जोर देबाक प्रवृत्तिकेँ परम्परित एवं आधुनिक-दुनू शिक्षा-पद्धति स्वीकार करैत अछि ।

मुदा वर्तनीक भूमिका मौखिक अभिव्यक्ति धरि सीमित नहि रहैत अछि । लिखित अभिव्यक्तिक क्रममे ई आओरो महत्त्वपूर्ण भऽ उठैत अछि । एतय ध्यातव्य जे उच्चारण ओ लक्षित अभिव्यक्तिमे तारतम्य रहब आवश्यक अछि । संप्रेषण-दूरी (Communication gap) सँ वक्ताक अभिव्यक्ति एवं भावकक ग्रहणीय अर्थक तादात्म्यमे अन्तर भऽ जायत । जेना अमेरिकन, जर्मन आदिक अंग्रेजी उच्चारणकेँ बुझबामे सामान्य भारतीयकेँ असौकर्य होइछ ।

मैथिली भाषामे सभसँ जटिल समस्या वर्तनीक अछि । जतेक लेखक ततेक रूप । अर्थात् लिखित भाषाक ध्वनिमे अनेक रूपता । जाहि साहित्यमे सात सय वर्ष पुरान गद्य ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' उपलब्ध अछि, ताहि भाषा-साहित्यमे वर्तनीक भिन्नता दुःखक विषय थिक । एहि प्रसंग 3 जनवरी, 1960 इसवीमे मधुबनीक छात्रसँ आग्रह करैत आचार्य रमानाथ झाक मर्मस्पर्शी आग्रह द्रष्टव्य अछि –

''अपने लोकनिसँ हमर इएह अनुरोध जे मैथिलीक भविष्य अपनहि लोकनिक हाथमे अछि । अपने लोकनि सबसँ पहिने मिथिलाभाषा कोना लिखी से सिखैत जाइ । हम ई नहि कहब जे अपने लोकनि जेना हम लिखैत छी, तहिना लिखैत जाउ, यद्यपि अपने लोकनि कौं सेहो कहबाक अधिकार अछि । हम एतबे कहब जे अपने लोकनि मधुबनी महाविद्यालयमे एकमत भए एक रूपेँ लिखैत जाउ ओ मैथिली लेखन शैलीक नेतृत्वक श्रेय लैत जाउ ।''

वर्तनीक भिन्नताक हेतु एक उदाहरण देखल जाय – कएलनि, कएलन्हि, कएलैन्हि, कएलैनि, कैलन्हि, केलन्हि, कयलनि, कयलैन्हि, कयलैन्ह, कैलनि, कयलैनि आदि अनेक तरहेँ लिखल जाइत अछि । जनिका जे रूप रुचैत छनि, ताहि रूपेँ लिखैत छथि । भाषामे ई स्वच्छन्दता, अराजकताक रूप धारण कऽ लेलक अछि । जहिना अराजकतासँ समाजक अवनति होइत अछि तहिना भाषामे व्याकरणक बन्धन ढील भेलासँ अस्त-व्यस्तता आबि जाइत छैक । आइ जखन हमरा लोकनिक भाषा संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित भऽ गेल अछि, तखन एखनहु धरि भाषाक वर्तनीक बहुमान्य मानकीकरण नहि होयब एकर समृद्धि ओ स्तरीकरणक समक्ष एकटा यक्ष-प्रश्न जकाँ ठाढ़ रहत ।

वर्तनीक समस्या वा मैथिलीमे शैलीक समस्या पर समय-समय पर विचार-विमर्श होइत रहल अछि । सर्वप्रथम म० म० मुरलीधर झा अपन पत्रिका 'मिथिला मोद' मे मानक वर्तनी स्थापित करबाक प्रयास कयलनि । मैथिली साहित्य परिषद, मुजफ्फरपुरक अधिवेशनमे दोसर शैली निर्धारण समिति गठित भेल । एकर अध्यक्ष भेलाह म० म० उमेश मिश्र आ सचिव भेलाह जीवनाथ राय । समिति निष्क्रिय रहल मुदा अध्यक्ष आ सचिव अपन अभिमत प्रकाशित कराओल ।

तेसर प्रयास कयल गेल प्रो० रमानाथ झा द्वारा जे विभिन्न लब्धप्रतिष्ठ विद्वानक अभिमतक आधार पर वैज्ञानिक रीतिसँ वर्तनीक निर्धारण कयल आ तकर प्रयोग अपन 'साहित्य पत्र' मे कयल । चारिम प्रयास भेल 1960 ई० मे 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक

पत्र द्वारा जाहिमे मुख्यतः रमानाथ बाबूक 'ए' क संशोधन 'य' क रूपमे कयल गेल । 'कएल' कें 'कयल' कऽ देल गेल । एकर अतिरिक्त विकारी (ऽ)क प्रयोगक आधिक्य, इएहक स्थान पर 'यैह', 'ओएह'क स्थान पर 'वैह', 'सएह'क स्थानपर 'सैह', 'न्हि'क स्थान पर 'नि' (जेना 'कएलन्हि'क जगह पर 'कयलनि')क प्रचलन लेखन-प्रकाशनमे होमय लागल । पाँचम प्रयास 1977 ई० मे मैथिली अकादमीक स्थापना भेला पर मुदा मोटा-मोटी एहिमे मिथिला मिहिरेक शैलीकें अपनाओल गेल । मुदा एकर ई अर्थ नहि जे मिथिला मिहिर द्वारा प्रस्तावित वर्तनी सर्वमान्य भऽ गेल । एखनहु धरि रमानाथ बाबू अथवा परम्परित शैलीक वर्तनीक अनुयायीक संख्या कम नहि भेटत ।

उपर्युक्त विभिन्न प्रयाससँ मैथिली भाषाक वर्तनीमे किछु अंशमे एकरूपता आयल मुदा दिनानुदिन समयक संग पुनः अराजकता उत्पन्न भऽ रहल अछि । तेँ आइ मानक स्वरूप स्थिर नहि भऽ रहल अछि ।

1. यथा–कएल-कयल-कैल । एहिमे प्रथम उत्तम मुदा दोसर मध्यम अछि मुदा तेसरक प्रयोग उचित नहि अछि । कारण कैल बरद सेहो होइत अछि । प्रथम संस्कृत, दोसर हिन्दी आ तेसर उर्दूसँ प्रभावित अछि ।

2. अ-इ लघु वर्ण थिक, परन्तु बजबामे कतहु-कतहु गुरु रूपमे प्रयोग देखल जाइत अछि । यथा-सीता रामऽक घऽरमे रहतीह ।

3. कतहु-कतहु 'आ' ध्वनि 'अ' भऽ जाइत अछि-

   यथा- काका-कका

   मामा-ममा

4. इ आ उ क पाछू जायब = कॉल्हि=काइल्ह

   बालु=बाउल

5. कतेको ठाम 'इं' ईं मे बदलि जाइत अछि ।

   डोरि = डोरी

   चोरि = चोरी

   बालु = बालू

6. 'इ' मात्राक लोप सेहो कऽ देल जाइत अछि ।

यथा- धोबिनि = धोबिन

चलि गेल = चल गेल

7. एहिना किछु आओर उदाहरण अछि जाहिमे सरलीकरणक कारणेँ रूप बदलल अछि ।

यथा- करैत छथि = करै छथि

छन्हि = छनि

सङग = संग

8. हिन्दीक प्रभावसँ भेल परिवर्तन-

देआद = दिआद

केओ = कियो

9. 'ए' केँ 'अ' क रूपमे प्रयोग-

यथा-एखन = अखन

एतेक = अतेक

एहिठाम = अहिठाम

10. इएह=यैह, ओएह=वैह, सएह=सैह आदि । एहन परिवर्तन नव-नव लेखकक रचनामे देखबामे अबैत अछि ।

तहिना निम्नलिखित किछु सूची दऽ रहल छी जे अराजकताक सूचक थिक –

आङ्गन=आंगन

कओन=कओन

कनिआ=कनिआँ

आधा=अदहा

नाओ=नाव

पाओभरि=पावभरि

अएलाह=एला

बैसि गेलि=बैस गेल

पड़ाए गेलाह=पड़ा गेलाह

बहिनि=बहिन

छैक=छै

छलैक=छलै

उपर्युक्त उदाहरण सभमे हिन्दीक प्रभावक कारणेँ विकृति उत्पन्न भेल अछि । मात्र वर्तनी वा उच्चारणहि टामे नहि शब्दमे सेहो विकृति आबि रहल अछि ।

आब= सोहारीकेँ रोटी

जलखैकेँ नाश्ता

तीमनकेँ सब्जी

चाहकेँ चाय आदि मिथिलामे प्रचलित भऽ गेल अछि ।

वस्तुत: गणित ओ विज्ञान जकाँ कोनहु भाषाक वर्तनीकेँ निश्चित कसौटी पर कसि ई नहि कहल जा सकैत अछि जे इएह वर्तनी सबसँ वैज्ञानिक अछि । संगहि प्रयोक्ता किंवा लेखकक व्यक्तिगत स्वच्छन्दता पर सेहो अंकुश नहि लगाओल जा सकैत अछि । तखन एतबा अवश्य कहल जा सकैत अछि जे वर्तनीक प्रयोग उपयुक्त उच्चारण तथा मात्राक प्रयोगमे वस्तुनिष्ठताक दृष्टिएँ युक्तिसंगत शैलीमे कोनहु पूर्वाग्रहसँ उपर उठि होयबाक चाही । राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार द्वारा विभिन्न वर्गक हेतु विकसित पोथी सबमे एक मानक वर्तनीकेँ अपनाओल जयबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

मैथिली भाषा-भाषी जँ सतर्क नहि होयताह तँ भाषाक रूप आगू जा कऽ की भऽ जायत, से नहि कहि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वर्तनीसँ अहाँ की बुझैत छी ?
2. मैथिलीक वर्तनीमे एकरूपताक लेल कोन प्रयास कयल गेल ।
3. प्रो० रमानाथ झाक वर्तनी सम्बन्धी अवधारणाक उल्लेख करू ।
4. वर्तनीमे भिन्नताक कारणक उल्लेख करू ।
5. किछु मानक आ बदलल शब्दक उदाहरण लिखू ।
6. निम्नलिखितमे कोन शब्द पर हिन्दीक प्रभाव पड़ल अछि ।

   सब्जी, कयलनि, छैन्हि, चाय, रोटी, बालु, कियेक, कयल, बहिनि, गेलि ।